डॉ० अनुजा कुमारी
(इतिहास विभाग)
एस० एन० एस० आर० के० एस कॉलेज
सहरसा

Scanned with CamScanner

V.V.I

(2) Question:→ Write an essay on Greater India.

प्रश्न:-(वृहत्तर भारत पर एक लेख लिखे)।

उत्तर:→ विश्व की अधिकांश संस्कृतियों और सभ्यताओं की जन्मभूमि प्रधान रूप से ~~शि~~ एशिया है। विश्व की प्रारंभिक इतिहास की महत्वपूर्ण संस्कृतियों का उद्गम और विकास महाद्वीप की नदियों के उपजाऊ क्षेत्रों में हुआ मिश्र ईरान, ईराक चीन आदि महत्वपूर्ण सभ्यता संस्कृतियों के ~~[illegible]~~ ~~भारतीय~~ मध्य भारतीय सभ्यता संस्कृति का भी महत्वपूर्ण स्थान है। भारतीयों ने अपने मूल प्रदेश से निकलकर विदेशों में दूर-दूर तक बस्तियाँ बसायी। उन्होंने अपने राज्य स्थापित किये। साईबेरिया से सिंहल तक भारतीय सभ्यता संस्कृति का प्रचार प्रसार हुआ। सिन्धुघाटी से प्राप्त अवशेषों और बोगा चकुई अभिलेखों से यह ज्ञात होता है कि प्रागैतिहासिक काल में भारत का विदेशों के साथ घनिष्ट सम्बन्ध था।

प्राचीनकाल में महत्वाकांक्षी राजा अपनी विशाल-सेना द्वारा भीषण रक्तपात के उपरान्त दिग्विजय करते थे। लेकिन भारतीय सभ्यता संस्कृति बिना रक्तपात किये भारतीय व्यापारियों अपनिवेशकों एवं धर्म प्रचार को माध्यम से एक विलक्षण विजय प्राप्त की।

Trade:→ (व्यापारी) भारतीय व्यापारी व्यापार करने के उद्देश्य से विदेशों में जाया करते थे। प्राचीनकाल में भारतीय पश्चिम में सिकंदरिया और चीन समुद्र तट तक व्यापार करने जाते थे। सिन्धु निवासी का मिस्त्र आदि से व्यापारिक सम्बन्ध था। थैलेमी

Scanned with CamScan

से ज्ञात होता है कि रोम के साथ भी भारत का व्यापारिक सम्बन्ध था। रोम के साथ भी भारतीय मल-मल की बहुत मांग थी। रोमन स्त्रियाँ भारतीय मलमल का बहुत बड़े पैमाने पर प्रयोग करती थी। अतः वे व्यापार के साथ-साथ अपनी सभ्यता एवं संस्कृति का भी प्रचार प्रसार करते थे। जिससे विदेशों की लोग भारत की ओर आकर्षित हुए।

* उपनिवेश :→ उपनिवेशक विदेशों में उपनिवेश स्थापित करने के उद्देश्य से जाया करते थे। गुप्त सम्राट समुद्रगुप्त ने अफगानिस्तान तथा सिंहल द्वीप में अपने उपनिवेश स्थापित किये। मौर्य ने काबुल, कांधार, बलुचिस्तान आदि प्रदेशों में अपने उपनिवेश स्थापित किया।

* धर्म प्रचारक :→ धर्म प्रचारक धर्म प्रसार तथा भारतीय सभ्यता संस्कृति के प्रचार के लिए विदेशों में जाया करते थे। सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचारार्थ धर्म प्रचारकों के जत्थे विदेशों में भेजे थे। हिन्दू धर्म प्रचारक भी विदेशों में गये। परिणामतः उसके कार्यकलापों से भारतीय सभ्यता संस्कृति का प्रचार प्रसार हुआ।

* चीन और भारत के बीच सम्बन्ध :→ प्राचीनकाल में चीन भारत के बीच व्यापारिक एवं सांस्कृतिक सम्बन्ध थे। चीन में बौद्ध धर्म के प्रचार के परिणामस्वरूप भारत और चीन के सम्बन्ध और दृढ़ हो गये। चीन में बौद्ध धर्म के प्रचारकों में मतिंग धर्मरत्न आदि थे। चीनी सम्राट मिंगती के शासनकाल में बौद्ध धर्म को राजधर्म के पद

पर आसीन किया गया। फाहियान, ह्वेनसांग आदि चीनी यात्री बौद्ध धर्म की खोज करने भारत आये। भारत में इन यात्रियों ने बौद्ध धर्म विहारों एवं साहित्य का अध्ययन किया। उन्होंने पुस्तकों हस्तलिपियों संग्रह किया। उन्होंने अपने देश लौटकर भारतीय ग्रंथों का अनुवाद चीनी भाषा में किया भारत भी सैकड़ों भिक्षु-विद्वान बौद्धधर्म और साहित्य का प्रचार करने चीन गये। इनमें कुमार जीव का नाम उल्लेखनीय है। जिसने कई प्रसिद्ध ग्रंथों का अनुवाद ~~चीनी भाषा में~~ किया। ~~भारत की सैकड़ों~~ - According to R.C Majumdar we find that the Indian Budha louts translated about 3000 Budha books in the Chinese language.

* तिब्बत के साथ सम्बन्ध :→ तिब्बत के साथ भी भारत के व्यापारिक सम्बन्ध थे। व्यापारिक सम्बन्ध के फलस्वरूप तिब्बत वासियों पर भारतीय सभ्यता का प्रभाव पड़ा। स्रांग सैन गैम्पो नामक सम्राट ने तिब्बत में बौद्ध धर्म का प्रचार किया।

कोरिया एवं जापान में भी बौद्धधर्म का प्रचार हुआ चौथी शताब्दी में इन देशों में बौद्ध धर्म का प्रचार प्रारंभ हुआ। इस धर्म को राजधर्म के पद पर आसीन किया गया। राज्य संरक्षण प्राप्त रहने के कारण इन देशों में बौद्ध धर्म का भरपूर प्रचार प्रसार हुआ। भारतीयों ने हिन्दु चीन में चम्पा नामक राज्य की स्थापना की उन्होंने वहाँ राज्य

मंदिरों एवं चत्यों का निर्माण किया।

* वर्मा से सम्बन्ध:→ प्रथम शताब्दी में वर्मा में हिन्दू उपनिवेशों की स्थापना हुई। वर्मा की सभ्यता संस्कृति को भारतीय सभ्यता संस्कृति की महत्वपूर्ण देन है। अशोक के प्रचारकों ने यहाँ बौद्ध मत का प्रचार किया। वहाँ भारतीय साहित्य और पुरा विश्व प्रचलित हुई। चीनी विवरणों से यह ज्ञात होता है कि केन्द्रीय वर्मा राज्य में लाखों बौद्ध परिवार था। मॉन यहाँ के प्रमुख शासक थे।

* लंका भारत का संबंध :→ लंका और भारत के बीच का सम्बन्ध अत्यन्त घनिष्ट था। एक पौराणिक कथा के अनुसार लंका में भारतीय सभ्यता संस्कृति का प्रचारक रामचन्द्र था। तीसरी शताब्दी के मध्य में सम्राट अशोक ने अपने पुत्र महेन्द्र एवं पुत्री संघमित्रा को बौद्ध धर्म के प्रचारार्थ लंका भेजा था। उसके साथ ही पवित्र बोधि वृक्ष की एक शाखा भेजी गयी थी। ~~उसके साथ ही~~ परिणामतः लंका में बौद्ध धर्म का व्यापक प्रचार प्रसार हुआ। बाद में राजाओं के संरक्षण में चलकर यह राजधर्म बन गया। बौद्ध धर्म के साथ-साथ वहाँ ब्राह्मीलिपि और पाली भाषा का प्रचार हुआ। इसके अतिरिक्त वस्तुकला चित्रकला एवं मूर्तिकला का व्यापक प्रचार हुआ। वस्तुतः लंका के धर्म साहित्य और कला पर भारतीय सभ्यता संस्कृति का पूर्ण प्रभाव था।

Scanned with CamScanner

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि प्रचीन काल में भारतीयों ने एक ऐसे चमत्कारपूर्ण औपनिवेशिक साम्राज्य की स्थापना की जिसमे हिन्दु सभ्यता संस्कृतिक उजागर हुई। विभिन्न जातियों एवं संस्कृतियों के मिश्रण से सम्पूर्ण एशिया महाद्वीप पर हिन्दु सभ्यता का प्रभाव उत्पन्न हुआ। एक नवीन उत्साह और चेतना की भावना उत्पन्न हुई, जिसके आलोक में विचार एवं जीवन का नया दर्शन विश्व सभ्यता संस्कृति के सामने प्रस्फुटित हुआ।

* वृहत्तर भारत का पतन :→ कालान्तर में वृहत्तर भारत का पतन हो गया। इसके कई कारण थे। सर्वप्रथम इसे अरबो से बाधा पहुँची। अरबो ने अरबसागर पर अपना प्रभुत्व जमा लिया और वे हिन्द महासागर में भी अपना प्रभाव जमाने लगे जिससे इन सागरों पर भारतीय व्यापारियों का प्रभाव घटने लगा। 13वी० शताब्दी के प्रारंभ में भारत में मुस्लिम राज्य की स्थापना हो गई। जिससे भारतीय उपनिवेश एवं संस्कृति का प्रसार रुक गया। इसके पतन का एक कारण यह भी था कि उपनिवेशवादी आपस में लड़ने झगड़ने लगे थे। वे एक दूसरे पर आक्रमण भी करने लगे थे। अतः उसमें कमजोरी आने लगी। एकता एवं सहयोग की भावना का सदा अभाव हो गया। साथ ही साथ इसके विनष्ट होने का एक कारण यह भी था कि भारतीय उपनिवेशी पर मंगोलो के भीषण एवं भंयकर हमले होने लगे। जिससे उसकी शक्ति को गहरा धक्का लगा। जिससे इसका पतन हो गया।

—x—

Scanned with CamScanner